भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

वानिकी समाचार

वर्ष 09, अंक 5

अक्टूबर 2017

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

1. महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष
2. परामर्शी
2. वृक्ष उत्पादक मेला/किसान मेला
3. विदेश दौरा
3. कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठकें
4. प्रशिक्षण कार्यक्रम
5. अनुसंधान सलाहकार समूह (आर ए जी) की बैठकें
5. गणमान्य व्यक्तियों का दौरा
6. समझौता ज्ञापन (एम ओ यू)
6. महानिदेशक का दौरा
7. विविध
8. पुरस्कार
8. मानव संसाधन समाचार

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- पश्चिमी राजस्थान में कुएँ, नलकूप, नहर आदि सिंचाई सुविधाओं में महत्वपूर्ण वृद्धि होने के बावजूद 67.1 प्रतिशत घर वर्षा सिंचित कृषि पर निर्भर हैं। विभिन्न ब्लाकों में व्यापक अन्तर के बावजूद यहां गोबर के कण्डे, उपले, ईंधन की लकड़ी, फसल अवशेष एल. पी. जी. एवं उनके संयोजनों का ईंधन के रूप में होता है। इस क्षेत्र में उपले, ईंधन की लकड़ी, फसल अवशेष, एल. पी. जी. एवं मिट्टी के तेल का औसत प्रयोग क्रमशः 2.5 कि.ग्रा., 11.05 कि.ग्रा., 2.5 कि. ग्रा., 0.11 कि.ग्रा. एवं 0.16 ली. है। गर्मियों की तुलना में सर्दियों में ईंधन का प्रयोग अधिक होता है। हालांकि यहां लोग अन्य वस्तुओं का भी ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं परन्तु मुख्यतः वन एवं कृषि भूमि से ईंधन हेतु महत्वपूर्ण संसाधन एकत्रित किए जाते हैं। लगभग 29.7 से 30.7 प्रतिशत घरों की कृषि भूमि में बैल–हल एवं ट्रैक्टर क्रमशः कृषि गतिविधियों संचालन एवं खेत की जुताई हेतु प्रयुक्त होते हैं।
- गोगलाओ बीड नागौर में प्रायोगिक परीक्षण का तीन वर्षीय आकलन दर्शाता है कि जैविक एवं अजैविक उर्वरकों का एकीकृत प्रयोग फल देने वाले छोटे पेड़ों की संख्या एवं प्रति शाक उत्पादन बढ़ाने में सहायक हैं। अजैविक उर्वरकों के साथ पत्तों से प्राप्त कम्पोस्ट खाद का प्रयोग फल उपज बढाती है। पत्रक कम्पोस्ट के साथ फॉस्फोरस, पोटाश, जिंक सर्वोत्तम उपचार है, इसके बाद पत्रक कम्पोस्ट +NPK का उपचार है। वी ए एम के साथ प्रयोगों से भी परिणाम बहुत उत्साहवर्धक प्राप्त हुए हैं। प्रोटीन, शुगर, विटामिन सी की मात्रा अप्रैल व अक्टूबर में प्राप्त किए गए फलों में समान स्तर पर पाई गई।
- इस क्षेत्र में उगने वाले *कैपरिस डेसीडुआ* (कैर) जो एक 4 से 5 मी. ऊंचे छोटे झाड़ीदार वृक्ष है, की उत्पादकता बढ़ाने पर एक अध्ययन किया गया। कैर विभिन्न प्राकृतिक आश्रयों में अत्यधिक शुष्क तापमान की स्थिति में जीवित रहकर मृदा को मजबूत पकड से बांधे रह सकता है। यह कोटा, बांसवाडा तथा झालावाड़ के उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों के अलावा समस्त राजस्थान में पाया जाता है। ''थार मरूस्थल के ग्रामीण क्षेत्रों में जीविकोपार्जन हेतु कैर की उत्पादकता'' विषय पर एक अध्ययन किया गया । यह वृक्ष वर्ष में 2 से 3 बार पत्ते, फूल एवं फल उत्पन्न करता है। इस वृक्ष पर 1.3 से 1.8 से.मी. व्यास के गोल, गूदायुक्त एवं गुलाबी अथवा लाल रंग के फल लगते हैं। ग्रामीण लोग इस फल से अतिरिक्त आमदनी अर्जित करते हैं। इस फल का अचार एक मूल्यवर्धित उत्पाद है। जोधपुर बाजार से सन् 1995–2011 तक के खुदरा बाजार दर के आंकडे एकत्रित किये गये, जिसके अनुसार 1995 में कैर के खुदरा बाजार दर में 80 से 100 रूपया प्रति किलो से 2011 में 300–350 रूपया प्रति किलो तथा 2017 में 1000 रूपये प्रति किलो तक की निरंतर वृद्धि हुई। इसका मूल्य छोटे आकार के फल में बढ़ जाता है। हालांकि फलों

को मुख्यतः वनों से एकत्रित किया जाता है। इनके घरेलूकरण हेतु प्रयास नही हुए है।

- भारतीय प्रबंधन संस्थान उदयपुर के परिसर में निम्नीकृत अरावली पहाड़ियों के पुर्नस्थापन एवं पुननिर्माण हेतु प्रजाति मूल्यांकन'' विषय पर एक परियोजना का प्रारम्भ अगस्त 2014 में किया गया जिसका उद्देश्य निम्नीकृत पहाड़ियों के पुर्नस्थापन में उनकी उपयोगिता हेतु शाक प्रजातियों एवं विभिन्न वृक्षों का मूल्यांकन करना था। स्थलो का सर्वेक्षण किया गया तथा प्रयोगों के रूपरेखीय प्रायोगिक विवरण को अंतिम रूप दिया गया। कंटूर ट्रेंचेस (2200 रनिंग मी.); मृदा एवं जल संरक्षण मापों के अनुरूप में बनाए गए। 22 पौध–प्रजातियों की पौध मृदा एवं भूमि विशेषताओं के आधार पर इन ब्लॉकों में कलम रोपित की गई। *बोसवेलिया सेराटा* की शाखा कलम का पौध रोपण 150 स्थानों पर किया गया। नील गाय ब्रशवुड से पौधों की सुरक्षा हेतु प्रत्येक पौधे के लिए झाड़–बाड़ की गई। विभिन्न प्रजातियों के बीजों को समोच्च खाई की मेढ़ पर बोया गया। पौध रोपण क्षेत्र में उपलब्ध वृक्षों, रोपित वृक्षों एवं झाड़ियों को बेहतर आकार देने के लिए छंटाई की गई। मृत पौध को हटाकर पुनः पौध रोपण किया गया। नियमित अंतराल पर जीवन रक्षक सिंचाई प्रदान की गई। *डैंड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस, टर्मिनालिया अर्जुना, इम्बिलिका ओफिसिनालिस, थेसपिसिया पापुनालिया* में जीवन दर वृद्धि उच्च थी।
- परियोजना के परिणामों से उन वृक्षों एवं शाकों की प्रजातियों की प्राथमिकता सूची उपलब्ध होती है जिससे निम्नीकृत अरावली पहाड़ियों के पुननिर्माण एवं पुर्नस्थापन हेतु प्रभावी रूप से उपयोगी किया जा सकता है, तथा इसी तरह के क्षेत्र में जैव विविधता बढाने हेतु इस पद्धति का पालन किया जा सकता है।
- इन निष्कर्षों का उपयोग भारतीय प्रबंधन संस्थान, उदयपुर द्वारा निम्नीकृत अरावली पहाड़ियों के विस्तृत क्षेत्र के भू–निर्माण एवं मूल अवस्था जैसी स्थिति में पुनर्स्थापन के लिये उपयुक्त कार्यनीति तैयार करने हेतु किया जा सकता है। दीर्घाविधि में यह अपक्षरण नियंत्रण, जैवविविधता वृद्धि, कार्बन अवशोषण मान एवं दीर्घावधि पारितंत्र की सेवाओं में योगदान करेगा।

परामर्शी

- पूर्वी ब्लॉक मार्की बार्का एवं पश्चिमी ब्लॉक सिंगरौली कोलफील्ड क्षेत्र पर तैयार की गई अंतिम रिपोर्ट सेंट्रल माइन प्लानिंग एवं डिजाइनिंग इंस्टीट्यूट, (केंद्रीय खान योजना एवं डिजाइन संस्थान), रांची, झारखंड़ को जमा की गई।
- तेलंगाना राज्य वन विभाग ने 25 अक्टूबर 2017 को व.जै.सं. हैदराबाद द्वारा कार्ययोजना तैयार करने पर परामर्शी भूमिका को मंजूरी प्रदान की।

वृक्ष उत्पादक का मेला/किसान मेला

संस्थान	प्रतिभागी/आयोजित	समयावधि	स्थान
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का.वि.प्रौ.सं., बंगलूरू	भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आई आई एस एफ)–2017	13 से 16 अक्तूबर 2017	चेन्नई
हि.व.अ.सं., शिमला	''मंजिल हिमाचल प्रदेश'' मेगा प्रदर्शनी	24 से 26 अक्टूबर 2017	सोलन, हिमाचल प्रदेश

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आई आई एस एफ– 2017)

''मंजिल हिमाचल प्रदेश 2017'' मेगा प्रर्दशनी

विदेश दौरे

कार्मिकों का नाम	संस्थान	दौरे का उद्देश्य	समयावधि	स्थान
डॉ. अमित कुमार वर्मा, तकनीकी अधिकारी एवं नमिता नंहदादियिल कलियाथन, तकनीकी अधिकारी	व.अ.सं., देहरादून	2017 एशिया वनाग्नि प्रबंधन प्रशिक्षण	15 से 22 अक्टूबर 2017	सिओल, दक्षिण कोरिया

कार्यशालाएं / संगोष्ठी / बैठकें

सं.	शीर्षक	समयावधि	लाभार्थी
	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (का.वि.प्रौ.सं.), बंगलुरू		
1.	हरित क्षेत्र बढ़ाने की अवधारणा– महत्वपूर्ण आवश्यकता	31 अक्टूबर 2017	का.वि.प्रौ.सं. के कर्मचारी एवं अन्य संस्थानों के 70 प्रतिभागी
2.	वन, वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण	25 से 27 अक्टूबर 2017	वन, वन्यजीव एवं पर्यावरणीय संरक्षण पर हितधारक
	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान (व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर		
3.	राष्ट्रीय कौशल योग्यता तंत्र हेतु वानिकी कौशल पाठ्यक्रमों के एकीकरण हेतु कार्यनीतियां	25 अक्टूबर 2017	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान के विभागाध्यक्ष एवं वैज्ञानिक
4.	लाभकारी सूक्ष्मजीव एवं वानिकी में उनकी भूमिका	26 अक्टूबर 2017	63 वैज्ञानिक, शोध अधिकारी एवं शोध अध्येता

का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू में वन, वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में राष्ट्रीय कौशल योग्यता हेतु वानिकी कौशल के एकीकरण हेतु कार्यनीतियां

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.), शिमला

5.	वनों से चारा उपलब्धता में वृद्धि तथा इसकी गुणवत्ता में सुधार	30 अक्टूबर 2017	वैज्ञानिक, अधिकारियों तथा अन्य अनुसंधान सहयोगी कार्मिकों सहित अनुसंधान एवं तकनीकी कार्मिक

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

6.	जोधपुर के विभिन्न समुदायिक संरक्षित क्षेत्र में विकास योजना निर्माण हेतु जैविक एवं आरक्षित सामुदायिक लोगो की भागीदारी को बढ़ाने हेतु आकलन	16 अक्टूबर 2017	राज्य वन विभाग, जोधपुर के 67 वैज्ञानिक एवं कर्मचारी
7.	थार मरूस्थल के ग्रामीण क्षेत्रों मे आजीविका बढ़ाने हेतु कैर *(कैपरिस डेसीडुआ)* का उत्पादन बढ़ाना	एक दिन	राज्य वन विभाग के 50 कार्मिक वैज्ञानिक, किसान, एवं आयुर्वेदिक चिकित्सक आदि

शु.व.अ.सं., जोधपुर में जोधपुर के विभिन्न आरक्षित समुदायों में विकासोत्तर योजना एवं जागरूकता बढ़ाने हेतु जैव विविधता एवं जन सहभागिता का आकलन

शु.व.अ.सं., जोधपुर में थार रेगिस्तान के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सृजन हेतु कैर *(कैपरिस डेसीडुआ)* की उत्पादकता वृद्धि

वन उत्पादकता संस्थान (व.उ.सं.), रांची

8.	आनुवंशिकी विविधता अनुमानन पर आन्तरिक कार्यशाला	13 अक्टूबर 2017	सभी अधिकारी, वैज्ञानिक, तकनीकी कर्मचारी,मंत्रालयी कर्मचारी, अनुसंधान अध्येता आदि
9.	कविराज हर्बल गार्डन में परस्थाने संरक्षण का महत्व एवं स्वास्थ्य सुधार प्रबंधन हेतु पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण	28 अक्टूबर 2017	

प्रशिक्षण कार्यक्रम

सं.	शीर्षक	समयावधि	लाभार्थी

वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून

1.	व.अ.सं., द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर जागरूकता विकास	24 से 26 अक्टूबर 2017	प.व.ज.प. मंत्रा., भारत सरकार के प्रयोजन के अंतर्गत किसान, स्वयं सहायता समूह एवं अन्य
2.	नर्सरी एवं बीज प्रौद्योगिकियां		

वन आनुवंशिकी एंव वृक्ष प्रजनन संस्थान(व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर

3.	*मीलिया डूबिया* की खेती	23 अक्टूबर 2017	केरल के 12 वन अधिकारी केरल के विभिन्न भागों से 75 किसान
4.	वृक्ष नाशी–कीट एवं रोग प्रबंधन		केरल के विभिन्न भागों से 75 किसान
5.	जैववर्धक एवं जैव उर्वरक	24 अक्टूबर 2017	केरल के विभिन्न भागों के किसान
6.	जैव संभावनाऐं एवं जैवचौर्य	3 दिन	नेचर क्लब/इको–क्लब सदस्यों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, एन.जी.ओ., जन–जातीय संगठनों, महिला स्वयं सहायता समूहों सहित विविध

व.अ.सं. द्वारा तकनीकी विकास पर जागरूकता बढ़ाने पर प्रशिक्षण

व.अ.सं., देहरादून में नर्सरी एवं बीज प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में जैवसंभावनाऐं एवं जैवचौर्य पर प्रशिक्षण

शोध सलाहकार समूह (आर ए जी) की बैठकें

- 13 अक्टूबर 2017 को हि.व.अ.सं., शिमला में
- व.व.अ.सं., जोरहाट में 9 से 10 अक्टूबर 2017

गणमान्य व्यक्तियों का दौरा

- व.अ.सं., देहरादून में 09 अगस्त 2017 को मलेशिया के उच्चायुक्त एच.ई.डेटो हिदायत अब्दुल हमीद ने दौरा किया।
- ए.आर.सी.बी.आर. आइजोल में 30 अक्टूबर 2017 को श्री ओंकार सिंह, भा.व.से, पी.सी.सी.एफ., अरूणाचल प्रदेश में दौरा किया।

एच.ई. डेटो, हिदायत अब्दुल हमीद, उच्चायुक्त, मलेशिया का व.अ.सं., देहरादून का दौरा

समझौता ज्ञापन (एम ओ यू)

- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून तथा ऊर्जा एंव संसाधन संस्थान, नई दिल्ली के मध्य प्रारंभिक 10 वर्ष की अवधि के लिए 17 अक्टूबर 2017 को एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर हुए। एम ओ यू का मुख्य उद्देश्य भारत एवं दक्षिणी विश्व के संवहनीय विकास हेतु अनुसंधान है। टी ई आर आई के मुख्य ध्यानाकर्षण क्षेत्र स्वच्छ–ऊर्जा, जल प्रबंधन, प्रदूषण प्रबंधन, संवहनीय कृषि एवं जलवायुवीय तन्यकता को प्रोत्साहित करना है।
- का.वि.प्रौ.सं. तथा ग्लोबल अकादमी ऑफ टैक्नोलॉजी, बंगलुरू के मध्य विशेषज्ञ, वैज्ञानिक एवं विद्यार्थियों के आदान/प्रदान हेतु 5 अक्टूबर 2017 को एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर हुए।

महानिदेशक का दौरा

- डॉ. सुरेश गैरोला, भा.व.से., महानिदेशक ने निम्नलिखित संस्थानों का दौरा किया।
  - ★ महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., ने 29 व 30 अक्टूबर 2017 को व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का दौरा किया। उन्होंने 30 अक्टूबर 2017 को व.आ.वृ.प्र.सं. में वी ए एम जैव उर्वरक उत्पादन इकाई का उद्घाटन किया।
  - ★ उ.व.अ.सं., जबलपुर में 26 से 28 अक्टूबर 2017। उन्होंने कुशल भारत हेतु कौशल विकास योजना के अंतर्गत बांस आधारित हस्तशिल्प उत्पादों से अतिरिक्त आय के अंतर्गत आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने संस्थान के शोध कार्यों एवं अन्य कार्यकलापों की समीक्षा की।
  - ★ हि.व.अ.सं., शिमला में 19 से 22 अक्टूबर 2017। महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने इस परिसर में कनिष्ठ शोध अध्येता छात्रावास का उद्घाटन किया।

भा.वा.अ.शि.प. देहरादून तथा ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान, नई दिल्ली के मध्य एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए

हि.व.अ.सं., शिमला में कनिष्ठ शोध अध्येता छात्रावास का उद्घाटन करते महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर में बी ए एम जैव उर्वरक उत्पादन इकाई का उद्घाटन करते महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

विविध

संस्थान	विशेष दिन/विषय वस्तु	समयावधि
भा.व.अ.शि.प., देहरादून व.जै.सं., हैदराबाद व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर हि.व.अ.सं., शिमला	स्वच्छ भारत अभियान	2 अक्टूबर 2017
व.व.अ.सं., जोरहाट बां.व.बें.उ.अ.के., आईजॉल व.आ.आ.वि.के., अगरतला	स्वच्छ भारत पखवाड़ा	12 और 31 अक्टूबर 2017
भा.व.अ.शि.प., देहरादून व.अ.सं, देहरादून हि.व.अ.सं., शिमला व.उ.सं., रांची व.व.अ.सं., जोरहाट बां.व.बें.उ.अ.के., आइजॉल व.आ.आ.वि.के., अगरतला	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	30 अक्टूबर 2017 से 4 नवम्बर 2017

हि.व.अ.सं., शिमला में स्वच्छ भारत अभियान

बां.व.बें.उ.अ.के., आइजॉल में स्वच्छ

व.व.अ.सं., जोरहाट में स्वच्छ भारत अभियान

व.अ.सं., देहरादून में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

व.आ.आ.वि.के.,अगरतला में सर्तकता जागरूकता

पुरस्कार

- भारतीय प्रबंध संस्थान, काशीपुर ने वर्ष 2011 से 2016 तक भा.वा.अ.शि.प. के सभी संस्थानों के कार्यों का मूल्यांकन किया। व.आ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर, को सर्वोत्तम श्रेणी एवं भा.वा.अ.शि.प. के अन्य संस्थानों में अग्रणी स्थान पर रहने पर, डॉ. एस सी गैरोला, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर को 30 अक्टूबर 2017 को अपने व.आ.वृ. प्र.सं. कोयम्बटूर, दौरे पर ''ममैंटों ऑफ एप्रीसिएसन/स्मृति चिन्ह'' प्रदान किया।
- हि.व.अ.सं., शिमला ने 24 से 26 अक्टूबर 2017 को ''फ्रेड्स एक्सहिबिशन एण्ड प्रमोशन प्राइवेट लि.'', नई दिल्ली द्वारा 24 से 26 अक्टूबर 2017, सोलन में ''लक्ष्य हिमाचल प्रदेश 2017'' मेगा प्रदर्शनी में एक प्रदर्शन स्टॉल लगाकर सहभागिता प्रस्तुत की तथा संस्थान के ''स्टॉल को सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण'' के लिए पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. विनित जिस्टू, वैज्ञानिक 'सी' हि.व.अ.सं., शिमला का स्तंभ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका ''कोण्डे नास्ट ट्रैवलर'' के अक्टूबर 2017 के अंक में ''हिमालय को जानने वाले 50 लोगों'' में नाम सम्मिलित हुआ। ये 50 लोग (गृहस्वामी से लेकर हस्तशिल्पकार तक) इन पर्वतों में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन कर रहे है।

महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प., निदेशक व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को एक स्मृति चिहन प्रदान करते हुए

हि.व.अ.सं., शिमला को सर्वोत्तम स्टॉल प्रदर्शन का पुरस्कार दिया गया

मानव संसाधन समाचार

नाम एवं पदनाम	दिनांक
भा.वा.अ.शि.प. प्रत्यावासन/कार्यमुक्ति	
श्री आर.एस. प्रशान्थ, निदेशक व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	31.10.2017
श्री एम. सैंथिल कुमार, सी.एफ., व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	31.10.2017

नाम व पदनाम	दिनांक
सेवानिवृत्त	
डॉ. लक्ष्मी रावत, वैज्ञानिक–जी, व.अ.सं., देहरादून	31.10.2017
डॉ.अरूण कुमार जोशी, निजी सचिव, भा.वा.अ.शि.प. (मुख्यालय)	31.10.2017

संरक्षक :
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक
संपादक मंडल :
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
श्री रमाकांत मिश्र, स.मु.त.अ., (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

प्रत्याख्यान

- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री संपादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रकाशित सामाग्री प्रतिबिंधित नहीं करती है।
- यहां प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।